बाबा बैद्यनाथ झा
जन्मतिथि- 03.08.1955
जन्मस्थान - कचहरी बलुआ, जिला-पूर्णियाँ(बिहार)पिन-854201
पिता का नाम- स्मृति शेष श्री सूर्य मणि झा
माता का नाम- स्मृति शेष- गौरी देवी
मोबाइल नम्बर - 7543874127

रखता निंदक सर्वदा, मैं भी अपने पास।
कर देता मेरा वही, सर्वांगीण विकास।।
सर्वांगीण विकास,अन्य को त्रुटि बतलाकर।
करे सतत उपकार,गंदगी साफ कराकर।।
उसके कारण आज,सुधरकर मेवा चखता।
देकर मैं सम्मान,निकट निंदक को रखता।।

****

कैसे पानी के बिना,बुझ पाएगी प्यास?
जलसंकट से जूझती,धरती आज उदास।।
धरती आज उदास,दुःख की बदली छायी।
मरते लाखों जीव,हमें पर लाज न आयी।।
जल-संरक्षण हेतु,त्याग दें अब मनमानी।
सोचें ठोस उपाय,मिलेगा कैसे पानी ।।

****

करती है प्रायः कली, निज पराग का दान।
अपना वैभव बाँटना, होता कार्य महान।।
होता कार्य महान, धन्य हो जाता जीवन।
यौवन का उपयोग, कराना चाहे सज्जन।।
धन को नश्वर जान,कली संचय से डरती।
भँवरे को तन सौंप,जन्म को सार्थक करती।।

****

बच्ची पक्षी की तरह, उड़ने को तैयार।
पर वह खुद को मानती, पंख बिना बेकार।।
पंख बिना बेकार, खुशी में अब झूमेगी।
पा लेगी जब लक्ष्य, गगन को तब चूमेगी।।
सब कुछ हो उपलब्ध,लगन हो जिसकी सच्ची।
मन की उच्च उड़ान,भरेगी अब यह बच्ची।।

****

बच्चे वर्षा काल में, खेल रहे हैं खेल।
नहा रहे सब साथ में, है आपस में मेल।।
है आपस में मेल,नहीं कीचड़ से डरते।
गिर जाता यदि एक,मदद उसकी सब करते।।
निश्छल बालकवृंद, हृदय के होते सच्चे।
लगे मनोहर दृश्य, खेलते जब हैं बच्चे।।

****

रहकर ये फुटपाथ पर, कर लेते निर्वाह।
रुकने से रुकती नहीं,इस जीवन की राह।।
इस जीवन की राह,भूख से बच्चा रोता।
बेघर है परिवार, गुजारा फिर भी होता।।
जी लेते कुछ लोग,कष्ट हर भारी सहकर।
जीवन है गतिमान,किसी हालत में रहकर।।

****

बाला अपने खेत में, काट रही है धान।
पढ़ी-लिखी यह बालिका,अब है एक किसान।।
अब है एक किसान, गर्व से खेती करती।
अन्य कृषक में नित्य,जोश नव साहस भरती।।
एक नया इतिहास,आज इसने रच डाला।
वैज्ञानिक हर ढंग,सिखाती है यह बाला।।

****

पक्षी कलरव कर रहे, शोभित है उद्यान।
हरीतिमा पर आज है,उन दोनों का ध्यान।।
उन दोनों का ध्यान,नित्य क्यों कटते जंगल?
हवा नहीं हो स्वच्छ,कहाँ से होगा मंगल?
बनते जाते आज, आदमी जीवनभक्षी।
जीवों के रक्षार्थ, सोचते दोनों पक्षी।।

****

मीरा बाई हो गयी, कृष्ण-प्रेम में लीन।
सम्मुख प्रभु रहने लगे, होकर प्रेमाधीन।।
होकर प्रेमाधीन,कृष्णमय जग अति पावन।
गाती मीरा गीत,भक्तिमय शुभ मनभावन।।
राजपाट से श्रेष्ठ,शरण प्रभु की सुखदाई।
राधा का अवतार, पुनः है मीरा बाई।।

****

मेरी जिज्ञासा नहीं, हो पाती जब शान्त।
बढ़ने लगती व्यग्रता, काया होती क्लान्त।।
काया होती क्लान्त,व्यथित मन रोता रहता।
धारण करता मौन,अन्य को दर्द न कहता।।
लगने पर संयोग,मिटे हर ज्ञान-पिपासा।
गुरु से होती शान्त, सदा मेरी जिज्ञासा।।

****